eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

आधुनिक भारत के निर्माण में आर्यसमाज एवं ब्रहमसमाज की महती भूमिका : एक अध्ययन

डा0 कल्पना गुप्ता[1] एवं अनुष्का तिवारी[2]
[1]सहायक आचार्य, डी0 ए–वी0 कालेज, कानपुर
[2]शोधार्थी कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

Received: 25 November 2025 Accepted & Reviewed: 28 November 2025, Published: 30 November 2025

Abstract

आधुनिक भारत का निर्माण 19 वीं शताब्दी में आरंभ हुआ। जब समाज में नए विचारों, सुधार आंदोलनो और राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ। अंग्रेजी शासन के समय भारत सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था। अंधविश्वास, जातिवाद, महिला उत्पीड़न, अस्पृश्यता और रूढ़िवादी परंपराओं ने समाज को जकड़ रखा था। इन आंदोलनों ने समाज में नई चेतना, समानता, शिक्षा और धार्मिक सुधारों की नींव रखी। इनमें ब्रहम समाज और आर्य समाज का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वामी दयानंद सरस्वती व राजाराममोहन राय का समाज निर्माण का मुख्य उद्देश्य भारतीय सभ्यता व संस्कृति का विकास करना तथा समाज व हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियों को दूर करना था। आर्यसमाज व ब्रहम समाज ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में भी अपनी अहम भूमिका निभाई। इन समाज के माध्यम से दिये गये संदेशों द्वारा भारतीय जनता में स्वराज तथा निज देश की भावना घर कर गई और लोग जोश से भरकर राष्ट्रीय आंदोलन में कूद गये। यह अध्ययन आधुनिक भारत में उनके द्वारा दिये गये संदेशों एवं समाज सुधारों को वर्णित कर विकसित राष्ट्र के निर्माण में महती भूमिका निभाने का एक लघु प्रयास है।

शब्द कुॅजी– आर्यसमाज का उद्देश्य एवं योगदान, ब्रहम समाज का उद्देश्य एवं योगदान, दोनो समाजों का सामाजिक प्रभाव, निष्कर्ष

Introduction

आर्य समाज की सीापना 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने की। उनका प्रमुख नारा था–'वेदों की ओर लौटो।' स्वामी दयानंद का मानना था कि भारतीय समाज की जडें वेदों में हैं, और यदि समाज को पुनः सशक्त बनाना है, तो उसे वेदों की शिक्षाओं के अनुसार चलना चाहिए।

आर्य समाज ने धार्मिक अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, कर्मकांडों और जाति–पाति के भेदभाव का विरोध किया। उन्होनें तर्क और विज्ञान पर आधारित धार्मिक जीवन का समर्थन किया। आर्य समाज ने लोगों में आत्मगौरव, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति की भावना जाग्रत की।

सामाजिक दृष्टि से आर्य समाज ने समानता, शिक्षा और स्त्री उत्थान पर विशेष बल दिया। स्वामी विवेकानंद ने कहा कि स्त्रियॉ पुरूषों के समान अधिकार रखती हैं। आर्य समाज ने गुरूकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा का प्रसार किया और चरित्र निर्माण, नैतिकता और स्वावलंबन को शिक्षा का मूल आधार बनाया।

ब्रहम समाज का उद्देश्य एवं योगदान– ब्रहम समाज की स्थापना 1828 में राजा राममोहन राय द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों को दूर कर एक तर्कसंगत, नैतिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

और आधुनिक समाज की सीापना करना था। राजा राममोहन राय ने एकेश्वरवाद का प्रचार किया और मूर्तिपूजा का विरोध किया। उन्होनें हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांतों को तर्क और मानवता पर आधारित बताया।

ब्रहम समाज ने धम के क्षेत्र में सुधार के साथ–साथ सामाजिक सुधारों पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होनें सती प्रथा, बाल–विवाह, बहुविवाह और नारी उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष किया। राजा राममोहन राय के प्रयासों से ही सती प्रथा पर ब्रिटिश सरकार ने 1829 में प्रतिबंध लगाया।

ब्रहम समाज ने शिक्षा के प्रसार को समाज सुधार का प्रमुख माध्यम माना। राजा राममोहन राय और अनके अनुयायियों ने आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और तर्क पर आधारित अध्ययन प्रणाली को बढ़ावा दिया। उन्होनें महिलाओं की शिक्षा और समान अधिकारों की वकालत की। इससे भारतीय समाज में बौद्धिक जागरण आया और लोगों ने तर्क, विवेक और समानता को अपनाना शुरू किया।

दोनों समाजों का सामाजिक प्रभाव– ब्रहम समाज और आर्य समाज दोनों ने भारत में समाजिक पुनर्जागरण की नींव रखी। इन आंदोलनों ने भारत को एक आधुनिक, तार्किक और प्रगतिशील दिशा में आगे बढ़ाया। इन सुधारों का परिणाम यह हुआ कि समाज में धार्मिक सहिष्णुता, समानता और राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ीं। ब्रहम समाज ने जहॉ पश्चिमीं विचारों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने का मार्ग दिखाया, वहीं आर्य समाज ने भारतीय परंपराओं में निहित मूल्यों का पुनः जीवित किया। दोनों ही आंदोलनो ने एक–दूसरे के पूरक के रूप में काम किया।

इन आंदोलनों के कारण भारतीय समाज में शिक्षा का प्रसार हुआ, महिलाओं की स्थिति में सुधार आया, अंधविश्वासों में कमी आई और जनता में आत्मसम्मान का भाव जागृत हुआ। परिणामस्वरूप, समाज ने आधुनिक राष्ट्र के निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाए।

निष्कर्ष– आर्य समाज और ब्रहम समाज दोनों ही आधुनिक भारत के निर्मांण के आधार स्तंभ हैं। जहॉ ब्रहम समाज ने भारतीय समाज को आधुनिकता, शिक्षा और तर्क की दिशा दी वहीं आर्य समाज ने भारतीय संस्कृति और आत्मगौरव को पुनर्जीवित किया। दोनों ने ही धार्मिक, सहिष्णुता, सामाजिक समानता, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देकर राष्ट्र की एकता और प्रगति की नीव रखी।

इन सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज को आधुनिक राष्ट्र बनने के लिए तैयार किया। उन्होनें यह संदेश दिया कि सच्चा राष्ट्र वही होता है, जहॉ समानता, न्याय, शिक्षा और मानवीय मूल्यों का आदर किया जाए। इस प्रकार, ब्रहम समाज और आर्य समाज ने भारत को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाकर आधुनिक राष्ट्र निर्माण की दिशा में अमिट योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1- The Arya Samaj Movement in South Africa, Thillayvel Naido- 1992 , Page No- 34
2- World Perspectives on Swami Dayanand Saraswati , Ganga Ram Garg- 1984, page- 20
3- www.wikipedia.com.
4- www.gyankosh.com
5- http://vajiramandravi.com